www.malviyaloharsandesh.com

दिसम्बर 2008 / जनवरी 2009

श्री देववंशीय

मालवीय लोहार संदेश

' शैक्षणिक, धार्मिक व सामाजिक पत्रिका '

श्री रणछोड़ भगवान की जय

श्री देववंशीय मालवीय लोहार नवयुवक मण्डल

• सम्पादक मण्डल (अवैतनिक) •

श्री घनश्याम मालवीय (आसोरिया) प्रधान सम्पादक

मु.पो. ठाकुरवास, वाया – राणावास, पाली (राज.)

मो. 9828513810, 02935 – 237322

E - mail. gsmalviya2k6@rediffmail.com

श्री श्रवणकुमार लोहार (भी.पंवार)

खरादीयों का बास, बिलाड़ा (जोधपुर)

मो. 9413059653, 9414404882

E-mail. classicalenglish@yahoo.com

श्री कुलदीप चौहान

सहायक अभियन्ता (रा.रा.वि.प्र.नि.)

ई–3, विद्युतनगर, अजमेर रोड़, ब्यावर

मो. 9413383156, 9414274626, 9351330626,

E - mail. kuldeepbchouhan@gmail.com

श्री धनराज रूघनाथजी लोहार (M.Tech)

E-113, जय अंबे नगर, थलतेज,

अहमदाबाद . 380054

मोः 9824001168, 079.26852427

E - mail. sales@sigmatrainers.com

Website. www.sigmatrainers.com

इस अंक में :—

1. सम्पादकीय	4
2. लोहशिल्पकारों का वर्ण ब्राह्मण हैं या क्षत्रिय	6
3. द्वितीय स्नेह मिलन समारोह	13
4. मालवीय लोहार युवा संघ अनुरोध	14
5. समाज का ऋण चुकाना होगा	15
6. जिला स्तरीय प्रतिमा अभिनन्दन समारोह	16
7. कर भला तो हो भला	18
8. सती अनुसूया	19
9. जीवन में एकाग्रता का महत्व	21
10. शिक्षा को अपनाएं जीवन को सुखी बनाएं	22
11. पिता सोच रहा हैं।	24
12. सदा स्वस्थ रहने का उपाय	25
13. लर्न इंग्लिश	27
14. पत्र मिला	29

सभी अपना सहयोंग कर प्रकाशन में अपना अमूल्य योगदान प्रदान करें।
पत्रिका के विषय में आपके निष्पक्ष विचार एवं रचनात्मक सुझाव हमें लिखे।

इस पत्रिका में प्रकाशित आलखों में लेखकों के अपने विचार हैं इसके लिए सम्पादक की सहमति / उत्तरदायी होना आवश्यक नहीं हैं। इसके लिए लेखक स्वयं जिम्मेदार हैं।

पत्रिका के वार्षिक सदस्यों का पूर्ण विवरण आगामी अंक में प्रकाशित किया जायेगा। कृपया पत्रिका के वार्षिक सदस्य बने।

' विशेष अनुरोध '

समाज के समस्त संस्थानों / ट्रस्टों से अनुरोध किया जा रहा हैं कि मालवीय लोहार संदेश पत्रिका की वेबसाईट अतिशीघ्र बनने जा रही हैं । अतः अपने समस्त संस्थानों से फोटोग्राफ एवं सम्पूर्ण विवरण एकत्र कर उपलब्ध कराने का कष्ट करावें । तथा इसके लिए सम्पादकीय मण्डल से सम्पर्क करें ।

मुद्रक :— चौधरी ऑफसेट, मा.जं. 9799465434, 9309216009

क्षेत्रीय प्रभारी मालवीय लोहार संदेश

श्री आत्माराम पुत्रश्री मीठूजी आसोरिया
मु.पो. जोबट, जिला – अलीराजपुर, मध्यप्रदेष, 09424880639

श्री श्याम सुन्दर लोहार (व. अध्या.)
97, गायत्री कॉलोनी पी.टी.–बी, सुमेरपुर (पाली) 9413533110

श्री मोडाराम सांवलोत
आर. के. स्कूल के सामने, षिवनगर, मण्डिया रोड़, (पाली) 9983550678

श्री हरिधर मालवीय
अस्पताल रोड़, मारवाड़ जंक्शन (पाली) 9460692101

श्री दिनेश मालवीय (अध्या.)
मु.पो.–सियाट, वाया–सोजत (पाली) 9828525675

श्री प्रभुलाल मिस्त्री
सी / 5, तीर्थराज एपारमेन्ट, राजमणी सोसायटी के पास, जीवराज पार्क, अहमदाबाद
09426367916

श्री राजेन्द्र गेहलोत
276–ए, रामेष्वर नगर, सेक्टर–सी, बासनी, फस्ट फेस, जोधपुर, 9928091259

श्री ओमजी आसोरिया
जय भवानी टेक्सटाईल्स, नं.86–4, नागवर पाल्या मैन रोड़, बैंगलोर 560093
080–64519554, 9243423554

श्री भॅवरलाल पुत्र श्री छोगालालजी देवड़ा चौहान
मु.पो. अजारी, जिला – सिरोही (पाली) 9414867730

श्री हीरालाल , बाबुलाल कास्तरा चौहान
श्री सांवलाजी समरसीबल पम्प, एन.एच.–8, सेवाली, राजसमन्द
9414171465, 9414174806

श्री हेमराज लोहार
म.नं.–6, सेक्टर –14, हिरण मगरी, उदयपुर 0294–2584936

श्री शिवलाल मालवीय
लोहारो का बास, नारलाई, वाया–रानी, (पाली). 02934–260351

श्री कन्हैयालाल पुत्रश्री विरदाराम पंवार
विसाल रीटेल लिमिटेड़, मीरा कॉस्मेटीक माल, रामनाथपुर (हैदराबाद) 09966258514

–: परामर्श दाता :–

श्री सुदामाजी भाटोतरा – पत्रकार, अलीराजपुर 09893019742

श्री जगन्नाथजी, 64–सी.एस.एस. एयर फोर्स रोड़, जोधपुर 0291 – 2613626

श्री डूंगरसिंह, अध्यक्ष – युवा संघ जोधपुर, 9929701290

श्रद्धेय स्वजातीय बंधुवर, जय श्री रणछोड़ भगवान !

सम्पादक की कलम से ...

सामान्यतः हम सुख और दुःख की स्थितियों को बड़ी सहजता से अन्तर कर देते है। एक सुखी व्यक्ति अक्सर यह मान कर चलता है कि उसके सुखों का संसार कभी नहीं बदलेगा। उलट इसके एक जन्म दुःखी व्यक्ति यह मान बैठता है कि उसके जीवन की अग्नि परीक्षा कभी समाप्त नही होगी। वह निराषा में मृत्यु को ही अपने दुःखों का अन्त समझ बैठता हैं। परन्तु वास्तविकता इसके उल्टी होती हैं। सुख और दुःख की देवियां अत्यन्त मोहक वस्त्र धारण कर प्रजापति ब्रह्माजी की आज्ञा पाकर उनके समझ प्रस्तुत हुई। उन्होंने पूछा पिताजी क्या आदेष है ?प्रजापति ने दोनों देवियों को निर्देष देते हुए कहा कि तुम दोनों मृत्यु लोक में यात्रा करो। आदेषानुसार वे पृथ्वी लोक के लिए चल पड़ी। चूंकि रास्ता बहुत लम्बा था अतः चलते चलते थकान आने लगी। रास्ते में उन्होंने एक सुन्दर उद्यान देखा जिसके समीप एक स्वच्छ सरोवर भी था। उन्होंने सोचा थोड़ी देर यहॉ रूक कर कुछ विश्राम कर ले। इससे थकान दूर हो जायेगी। उन्होंने वहॉ विश्राम किया। फिर दोनों ने वस्त्र उतारे और सरोवर विहार में मग्न हो गई। स्नान के बाद बाहर आकर अपने वस्त्र पहने तो भूल वष दोनों के वस्त्र आपस में बदलगए। सुख की देवी ने दुःख के व दुःख की देवी ने सुख के वस्त्र पहन लिए व मृत्यु लोक में पहुॅच गई। उस दिन से लेकर आज तक दुःख की कोख से सुख जन्म लेता है व सुख की कोख से दुःख पैदा होता है। कोई भी मनुश्य नितांत रूप में सुखी नहीं रह सकता चाहे कैसा भी फूलों भरा रास्ता क्यों न हो तथा कोई भी व्यक्ति नितांत दुःखी नहीं हो सकता चाहे राह कितनी भी कांटो भरी क्यों न हो। सुख दुःख अंधकार प्रकाष की तरह है । हम जानते है कि अंधकार का कोई अस्तित्व नहीं होता। जैसे ही प्रकाष होता है अंधकार स्वतः ही दूर हो जाता है उसे दूर करने के प्रयास नहीं करने पड़ते है मात्र प्रकाष प्रज्ज्वलित करना पड़ता है।

बस ऐसी ही स्थिति दूःख व सुख की है स्वभाव से हॅसते हॅसते जीना चाहिए व प्रभु का भजन करना ही सबसे बड़ी औशधि है। हर स्वजातीय बंधु को यह जानना चाािहए कि सुख या दुख की उसकी स्थिति स्थाई नहीं है इनमें बदलाव अपरिहार्य है। दुःख में सुमिरन सब करे, सुख में करे न कोई। जो सुख में सुमिरन करे, तो दुःख काहे को होय।।

बंधुओं मालवीय लोहार संदेष का नूतन अंक समाज को सौपते हुए अपार हर्श की अनुभूति हो रही है। विगत दीपावली विषेशांक आप लोगो को बहुत पंसद आया तथा आप

लोगों ने अपनी अमूल्य प्रतिकियाएं भी भेजी इसके लिए आप साधुवाद के पात्र है। आप के विचार व सुझाव जो इस पत्रिका को समाज की अपेक्षा पर खरा उतारने में मदद करे, सदैव आमंत्रित है। आप अपने क्षेत्र से जुड़ी सामाजिक संस्थाएं, भवन, कार्यक्रमों की रिपोर्ट, षिक्षा प्रद विचार, साक्षात्कार, समीक्षाएं आदि सीधे कार्यालय को भी भेज सकते है। इस पत्रिका में प्रकाषित लेख लेखको के निजी विचार है। इसमें सम्पादक की सहमति होना आवष्यक नहीं है।

आपका दर्शनार्थी सेवक
घनश्याम आसोरिया, ठाकुरवास

बधाई संदेश

आयुष्मान ''दिनेश के. गहलोत'' पुत्र श्री खींवराज एस. गेहलोत (मलाड़, मुम्बई) का शुभ विवाह दिनांक 9–11–08 को आयुष्मती ''हेमलता'8 पुत्री श्री मदनलाल लोहार (सोजत सिटी) के साथ धुम धाम से सम्पन्न हुआ।

नव विवाहित वर वधु को हमारी ओर से शुभकामनाएं और उज्जवल भविष्य की कामना के साथ

कुलदीप चौहान (जीजाजी) सहायक अभियन्ता (आरवीपीएनएल) ब्यावर 09413383156
छांया चौहान (दीदी) जिगर एवं ध्वनि
हितेष के गहलोत (भाई) 09820847965(आर्किटेक्ट)
मंजू श्री गहलोत (भाभी) हरीश के. गेहलोत
दलपत चौहान – अरूणा चौहान
राजामाता मोटर्स, नीलकंठ रोड़, सुमेरपुर 093090–809626

हमारा (लोहशिल्पकारों का) वर्ण ब्राहमण हैं या क्षत्रिय – एक विवेचन

हेमराज लोहार, म.नं. 6सी, सेक्टर नं. 14, हिरणमगरी (उदयपुर)

भाईन्दर (प.) मुम्बई से प्रकाशित मालवीय लोहार झण्कार पत्रिका में अलिराजपुर मध्यप्रदेश के बन्धु श्री सुदामा मोतीलालजी भाटोतरा ने यह प्रश्न उठाया हैं। इस प्रकार प्रश्न और विवाद हमारे समाज बन्धु अक्सर उठाते रहे थे। यह प्रश्न बड़ा जटिल हैं। इसका उत्तर सरल नहीं हैं। आज के संदर्भ में यह प्रश्न सामयिक भी नहीं हैं। फिर भी हम इस प्रश्न का विवेचन करते हुए इसे समझने और परखने का प्रयास इस लेख में कर रहे हैं।

लोह शिल्पकार की मूल एवं आदि उत्पति ज्ञानी, विज्ञानी और शिल्पज्ञ अंगिरा ऋषि से हुई थी। मालवीय लोहार समाज के भाट गुरू लोहार जाति की उत्पति ऋषि दधीचि से मानते हैं। दधीचि ऋषि के बारह (12) पौत्र थे। जिनसे बारह ही प्रकार के लोहार वंश प्रचलित हुए थे।

भगवान ब्रहमा के ज्येष्ठ पुत्र अथर्वा थे। अथर्वा ने सर्वप्रथम अग्नि का प्रादुर्भाव किया था। अथर्वा को अग्नि का आविष्कर्ता होने के कारण ही अंगिरा कहते हैं। अथर्वा को अथर्वा गिरस, अंगिरस आदि नामों से भी जाना जाता हैं। अथर्वा का विवाह कर्दम ऋषि शान्ति से हुआ था। इसी दम्पति के सौभाग्य से दध्ंगाथर्वण (अर्थात् :– दध्यंग पुत्र अथर्वा) अवतीर्ण हुए जो दधीचि केनाम से जगत में विख्यात हुए थे।

श्रीमद् भागवत महापुराण के अनुसार दधीचि ऋषि धर्म के परम मर्मज्ञ थे। उन्हें शुद्ध ब्रहम का ज्ञान था। उनका शरीर विद्या व्रत तथा तपस्या के कारण अत्यन्त ही दृढ़ हो गया था। उन्होंने अश्विनी कुमारों का उपदेश दिया था इसलिए उनका एक नाम अश्वसिर भी हैं। उन्होंने त्वष्टा ऋषि को नारायण कवच का ज्ञान दिया था। आप सर्वोच्च विज्ञानी थे। महान योद्धा भी थे। दधीचि ऋषि अथर्व वेद भौतिक विज्ञान के भी महान् ज्ञाता और उपदेशक थे। पुराणों में दधीचि के युद्धों में भाग लेने और भौतिक विज्ञान का विशेषज्ञ होने का भी उल्लेख हैं। शिव पुराण में दधीचि और भगवान विष्णु के युद्ध का वर्णन हैं। युद्ध के समय दधीचि पर अन्य शस्त्रों का प्रयोग किया। तब भगवान विष्णु ने दधीचि पर अन्य शस्त्रों का प्रयोग किया। विष्णु के सहायक देवताओं ने भी अनेक प्रकार के बाणों से दधीचि पर प्रहार किये। परन्तु शिवभक्त दधीचि ऋषि के कालाग्नि के सामने सभी अस्त्र और शस्त्र प्रभाव हीन हो गये थे। भगवान विष्णु और अन्य देवता मिलकर भी दधीचि को विष्णु पद भी प्राप्त हुआ था। भगवान दधीचि द्वारा दिये गये ब्रहम शिर और वज्रशिर अस्त्रों एवं नारायण कवच की सहायता से ही इन्द्र देत्यराज वृतासुर का संहार कर सका था।

उतर बताया जा चुका हैं कि दधीचि के पिता अथर्वा ने अग्नि को पैदा करने के विज्ञान का अविष्कार किया था। अग्नि पर नियंत्रण प्राप्त कर लेने के बाद अथर्वा ने अग्नि से धातुओं को गरम करके, उन्हें पिघला करकें, धातुओं के अस्त्र और शस्त्र बनाने का आविष्कार किया था। इस प्रकार वे लोहशिल्प के प्रथम आविष्कर्ता भी बने और लोहशिल्पकारों के प्रथम और आदि पुरूष भी कहलाये। ऋषि अंगिरा (अथर्वा) ने अग्नि का प्रार्दुभाव करने का ज्ञान तथा धातु शिल्प विज्ञान की विधा अपने पुत्र एवं पौत्रों प्रपौत्रों को देकर उसे आगे से आगे बढ़ाया। इसी परम्परा को कायम रखते हुए अथर्वापुत्र दधीचिऋषि ने उक्त ज्ञान विज्ञान को ओर आगे विकसित किया। देवासुरसंग्राम के बाद देवताओं ने अपने कुछ दिव्य अस्त्र शस्त्र सुरक्षित रखने हेतु महर्षि दधीचि के आश्रम में रखवा दिये थे। जब दैत्यों को इस बात की जानकारी प्राप्त हुई तो वे इन्हें छीनने के उद्‌देश्य से बार बार दधीचि ऋषि के आश्रम पर आक्रमण करने लगे। आश्रम पर दैत्यों का आतंक और भय निरन्तर बढ़ता ही गया। दधीचि ऋषि ने देवों की धरोहर को दैत्यों से बचाने के लिए अपने धात्विक विज्ञान के ज्ञान के प्रयोग से समस्त लोह अस्त्र शस्त्रों को द्रव लोहधातु में परिवर्तित कर दिया था। बाद में आवश्यकता के समय जब दैवों ने अपने समस्त आयुद्ध दधीचि ऋषि से वापस मांगे तो महान् विज्ञानी और लोह शिल्पकार महर्षि दधीचि ने द्रवलौह धातु को वापस ठोस लोह धातु में बदलकर उससे पहले से भी अधिक दिव्य, घातक और शक्तिशाली अस्त्र शस्त्रों का निर्माण कर देवों को सौंप दिये थे।

सम्पूर्ण विश्व के प्राचीन वैदिक, पौराणिक और एतिहासिक काल में इस प्रकार का कोई दूसरा उदाहरण आज तक प्राप्त नहीं होता हें जिसमें किसी वैज्ञानिक ने ठौस धातु को द्रव लोह धातु में बदलकर सुरक्षित रख दिया हो। ऐसे थे हमारे महान् पूर्वज लोह शिल्पप्रर्वतक दधीचि ऋषि। इन्ही दधीचि ऋषि के पुत्र और पौत्रों से समस्त प्रकार के लोह शिल्पकारों की उत्पति हुई थी।

श्री भाटोद्राजी ने दधीचि ऋषि की कथा पर भी शंका उठाई हैं। शंका उठाना स्वाभाविक भी हैं। कारण कि पूरे विश्व साहित्य में इस प्रकार ऋषि दधीचि की कहानी जैसी कथा कहीं अन्य जगह पर नहीं मिलती। हमारें समस्त प्राचीन वेद, पुराण और अन्य संस्कृत ग्रंथ बहुअर्थी हैं। इन ग्रथों की कथा समयज काल एवं व्याख्याकार के ज्ञान अनुभव के आधार पर कई प्रकार से की जा सकती हैं। प्रत्येक सूत्र की व्याख्या सामान्यता शब्दार्थ, भावार्थ और गूढ़ार्थ रूप से की जाती हैं। अलग – अलग विद्धान और ऋषि अपने अपने ज्ञान, दर्शन, अनुभव और विचारधारा के अनुसार इन सूत्रों की व्याख्या करते हैं। देश और काल के अनुसार भी व्याख्याएं बदलती रहती हैं। यही स्थिति दधीचि ऋषि की कथा की भी हैं। दधीचि ऋषि की जो कहानी हम सामान्यरूप से पुस्तकों में पढ़ते हैं या धार्मिक कथाओं

में अनेक हैं। उनके अर्थ भी बहुत से है। इस कथा में ब्रहमाण्ड की उत्पति, परिवर्तन और विकास मानवविकास, ज्ञानविज्ञान का विकास आदि कई गूढ़ार्थ निहित हैं। इन अर्थों में से बहुत ही संक्षिप्त में कुछ भावार्थ या गूढ़ार्थ ऊपर बताये गये हैं। इस लिये हमारा निवेदन हैं कि समाज बन्धु दधीचि ऋषि की कहानी के सामन्य अर्थ में नहीं उलझे। इस प्रकार उलझ जाने से भटक जाने का डर हैं। हां जो प्रबुद्ध समाज बन्धु इन दधीचि ऋषि के तत्व का गहन अध्ययन करना चाहते हैं वे पुराणों एवं अन्य ग्रन्थों का अध्ययन अवश्य ही करें। इससे स्पष्ट ज्ञान प्राप्त हो सकेगा।

विभिन्न पुराणों एवं अन्य ग्रन्थों के आधार पर अथर्वा ऋषि (अंगिरा) एवं दधीचि ऋषि का वंश वृक्ष निम्न प्रकार ज्ञात होता हैं :–

परमब्रहम परमेश्वर
!
ब्रहमा
!
अथर्व (अंगिरा) ऋषि
!
दधीचि ऋषि
!
पिप्लाद ऋषि
!

1	2.	3	4	5	6
वृद्दवत्स	गौतम	भारद्वाज	भार्गव	कौत्स	कपिल
7	8	9	10	11	12
शाण्डिलय	आत्रेय	पाराशर	गार्ग्य	कश्यप और	अल्पवत्स

इस प्रकार उपरोक्त वंशवृक्ष के अनुसार दधीचि ऋषि के पुत्र ऋषि पिप्पलाद के बारह (12) ऋषि पुत्रों से बारह (12) ही प्रकार के आदि गौत्र बने। यह बारह ऋषि गौत्र आज तक भी ब्राहमणों, क्षत्रियों, वैश्यों आदि सभी वर्णों में विद्यमान मिलते हें। इन्ही बारह ऋषियों से ही बारह प्रकार के मूल लोहशिल्पकार (लोहार) भी बने जो दधीचि ऋषि वंशज लोहशिल्पकार कहलाते हैं। मालवीय लोहशिल्पकारों के भाट इस तथ्य की पृष्टि अपनी पोथी द्वारा करते हैं।

कुछ लोह शिल्पकार अपनी उत्पति भगवान शंकर से मानते हैं किन्तु अधिकांश लोहशिल्पकार भगवान विश्वकर्मा को ही अपना आदि पुरूष स्वीकार करते हैं। हम लोहशिल्पकार अपनी उत्पति चाहे जिससे माने। यह अपनी अपनी मान्यता आस्था और विश्वास का प्रश्न हैं। परन्तु एक और महत्वपूर्ण बात यहां ध्यान देने योग्य हैं कि भगवान शंकर,

ऋषि अंगिरा, ऋषि दधीचि और विश्वकर्मा सभी वैदिक काल के देवता और ऋषि हैं। इन सभी का प्रादुर्भाव अति प्राचीनकाल में उस समय हुआ था जब वर्ण व्यवस्था का नामों निशान भी नहीं था। पूरी मानव जाति एक थी। उनमें वर्ण और जाति का भेदभाव नहीं था। वर्ण और जाति व्यवस्था तो हजारों वर्षों बाद पौराणिक और एतिहासिक काल में पैदा हुई थी। जबकि उपरोक्त देवता और ऋषि सतयुग काल में हुए थे। इस लिए आज हजारों वर्ष बाद यह मालूम कर सकना कि आज के लोह शिल्पकार किस वर्ण के है, लगभग असम्भव बात हैं।

जैसा कि उपर बताया जा चूका हैं कि ऋषिदधीचि वंशीय गौत्र आजकल सभी वर्णों ब्राहमण, क्षत्रिय, वैश्य एवं अन्य जातियों में प्राप्त होते हैं। लोह शिल्पकार जातियों में भी यह सभी गौत्र मिलते हैं। इससे यह प्रमाणित होता हैं कि समय और काल के प्रभाव से दधीचि वंश के गौत्रसभी वर्णों में प्रचलित हो गये हैं। इन्ही कारणों से भाई श्री भाटोतरा साहब ने अपने लोहार समाज के वर्ण के विषय पर जो प्रश्न उठाया हैं वैसा ही विवाद विद्धानों ने ऋषि दधीचि के विषय पर भी उठाया हैं कि दधीचि ऋषि ब्राहमण थे या क्षत्रिय। दधीचि ऋषि एक तरफ महान् विद्वान और ब्रहमज्ञानी हैं। वे ब्रहमज्ञान के प्रवर्तक और प्रचारक भी थे। दूसरी तरफ वे महान् शिल्पज्ञ और विकट योद्धा भी थे। संत तुलसीदासजी ने रामचरित्मानस में दधीचि की गिनती राम के पूर्वज राजाओं ने भी की हैं। इतिहास में दधीचि वंश के क्षत्रिय राजा, महाराजाओं और उनके विभिन्न राज्यों का भी उल्लेख मिलता हैं।

आज शंकाएं और भ्रम इसलिए भी पैदा होता हैं कि दधीचि नाम का अपभ्रंश होकर तथा बिगड़ कर कई रूप हो गये हैं। वेदों में दधीचि का मूल नाम दध्यंच या ''दध्यञ्च'' है। यह नाम बिगड़ कर 'दधीचि' बना। संस्कृत ग्रंथों, शिलालेखों और ताम्रपत्रों में 'दधीचिक', दहियक, दभिक, दधीचि आदि शब्दों का उल्लेख प्राप्त होता है। दहियक शब्द आजकल दहिया बन गया हैं।

आज शंकाएं और भ्रम इसलिए भी पैदा होता हैं कि दधीचि नाम का अपभ्रंश होकर तथा बिगड़ कर कई रूप हो गये हैं। वेदों में दधीचि का मूल नाम दध्यंच या ''दध्यञ्च'' है। यह नाम बिगड़ कर 'दधीचि' बना। संस्कृत ग्रंथों, शिलालेखों और ताम्रपत्रों में 'दधीचिक', दहियक, दभिक, दधीचि आदि शब्दों का उल्लेख प्राप्त होता है। दहियक शब्द आजकल दहिया बन गया हैं।

हमारे द्वारा दिये गये उपरोक्त सम्पूर्ण विवेचन पर विचार और मनन करने के बाद या आप स्वयं द्वारा अध्ययन करने के बाद, समाज बन्धु पाठक खुद ही स्वयं निर्णय करें कि वर्तमान समय के आपके अपने लोहार समाज का 'वर्ण' ब्राह्मण है या क्षत्रिय।

भगवान परशुराम की कहानी पुराण और इतिहास प्रसिद्ध कहानी हैं। लोहशिल्पकार समाज में यह मान्यता और विश्वास प्रचलित हैं कि भगवान परशुराम ने जब पृथ्वी को क्षत्रियों से विहीन कर दिया तो क्षत्रियों ने अपनी रक्षा के लिये स्वयं ने अस्त्र और शस्त्रों का निर्माण प्रारम्भ

कर दिया था। यही क्षत्रिय कालान्तर में समय और काल की परिस्थितियों के अनुसार धीरे धीरे लोहशिल्पकार (लोहार) जाति में परिवर्तित होते गये। मालवीय लोहार जाति के भाट गुरू भी यही कथा कहते हैं। प्राचीन इतिहास भी यही बात प्रमाणित करता हैं।

पौराणिक काल की गाथाओं से मालूम होता हैं कि उस अवधि में और उसके पूर्व ब्राहमण और क्षत्रियों मेें कोई भेदभाव नहीं था। ब्राह्मण क्षत्रियोंचित कर्म द्वारा क्षत्रिया बन सकता था औ क्षत्रिय भी ब्रहम कर्म द्वारा ब्राह्मण बन सकता था। कई ब्रहमज्ञानी ब्राह्मण चक्रवर्ती सम्राट भी थे। इसी प्रकार कई चक्रवर्ती क्षत्रिय सम्राट ब्रहमज्ञानी थे। ब्राह्मण और क्षत्रिय, राजा, महाराजा और सम्राटों में विभिन्न कारणों से आपसी युद्ध भी होते रहते थे। कई बार ब्राह्मण राजा, महाराजा हारते थे तो कई बार क्षत्रिय राजा महाराजा पराजित होते रहते थे। उपरोक्त काल अवधि के दौरान बीच बीच में कुछ काल ऐसे भी आये जब ब्राह्मण वंशीय सम्राटों ने या अन्य वर्णीय सम्राटों ने क्षत्रिय वंशीय सम्राटों का पूर्ण पराभव कर दिया था।

इससे क्षत्रियों के राज्य, साम्राज्य नष्ट हो गये और क्षत्रिय प्रभावहीन हो गये थे। ऐसे काल त्रेतायुग के प्रारम्भ से लेकर ईसा की तीसरी शताब्दी तक एक के बाद एक आते रहे हैं। ये ही ऐसे काल थे जब पराजित क्षत्रियों ने अपनी शक्ति को पुनः अर्जित करने और अपना वर्चस्व पुनः स्थापित करने के उद्‌देश्य से अस्त्रों और शस्त्रों का निर्माण कार्य स्वयं ने करना प्रारम्भ किया था। इसके पूर्व अस्त्र शस्त्रों के आविष्कार, निर्माण और विकास के कार्य तथा उनकी विद्या, शिक्षा एवं दीक्षा देने के कार्य प्रमुखतया ऋषि, महर्षि ही अपने अपने आश्रमों में किया करते थे।

ईसा पूर्व की चौथी शताब्दी से जब भारत में विदेशी यवन, शक, कुषाण, हूण आदि आक्रमणकारियों के एक के बाद एक राज्य स्थापित होने लगे और देशी राजे महाराजे हार कर राज्य विहीनहोते चले गये तो भारतीय राजा महाराजा, सामन्तों एवं जनपद गणराज्यों के आयुद्धों, अस्त्र शस्त्रों के निर्माता क्षत्रियों ने यह कार्य को अपने जीविकोपार्जन के साधन के रूप में अपनाना प्रारम्भ कर दिया और धीरे धीरे यह सभी क्षत्रिय लोह शिल्पकार बनते चले गये।

राजा, महाराजा, सम्राटों के राज्य काल में ऐसे देशी, विदेशी आक्रमणकारियों के समय आयुद्ध निर्माण कार्य का लोहशिल्प कार्य बहुत ही आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्य था। इस लोहशिल्प कार्य को करने वालों का राज्यों और समाज में दोनो ही जगह बहुत ही आदर सम्मान और महत्व था। आयुद्धनिर्माता लोहशिल्पकारों की आर्थिक स्थिति सुद्‌ढ़

होने से उनका सामाजिक स्तर भी बहुत उंचा और सम्मानीय हुआ करता था। इन कारणों से जब कभी किसी भी वर्ण और जाति के व्यक्ति या समूह जब आर्थिक संकट में होते और उनके पास रोजी, रोटी कमाने का कोई अन्य अच्छा और स्थाई साधन नहीं होता तब उस वर्ण, समूह जाति के लोग लोहशिल्प का कार्य खुशी, खुशी और स्वेच्छा से अपना लेते थे। इस प्रकार लोहशिल्पकारों का समाज हमारें देश में निरन्तर वृद्धि को प्राप्त होता गया। आज परिणाम यह हैं कि हमारे देश के बड़े से बड़े शहरों से लेकर छोटे से छोटे गांव में लोहशिल्पकार (लोहार) का एक न एक घर आवश्यक और अनिवार्य रूप से होता ही हैं।

भाई साहब श्री भाटोतरा ने यह प्रश्न उठाया हैं कि हमारा सम्बन्ध क्षत्रियों से होने का कोई प्रमाण प्राप्त नहीं होता हैं फिर भी हमारें गौत्र, क्षत्रियों के गौत्र क्यों हैं। श्री भाटोतरा ने इस प्रश्न का कि हम लोहशिल्पकारों का सम्बन्ध क्षत्रियों से हैं या नहीं, इसकी कुछ विवेचना हमने अपनी पुस्तक मालवीय लोहार में भी की हैं एवं ऊपर के पृष्ठों में भी की हैं। कुछ विवेचना इसी प्रश्न की अब हम आगे के पृष्ठों में भी करने जा रहे हैं।

हमारें भारतीय इतिहास में सातवी शताब्दी से लेकर बारहवीं शताब्दी तक का काल राजपूत काल माना जाता हैं। इसक काल के प्रमुख राजपूत वंश इस प्रकार मिलते हैं :— पाल वंश, सेन वंश, कर्कोट वंश, उत्पल वंश, शाही वंश, गहड़ताल वंश, चन्देल वंश, गुर्जर — प्रतिहार वंश, चौहान वंश, परमार वंश, चालुक्या या सांलंकी वंश, गुहिल वंश आदि आदि।

वर्तमान में हमारे देश के लोह शिल्पकारों ने उपरोक्त सभी राजपुत वंश के वंशजों के गौत्र प्राप्त होते हैं। राजस्थान, मध्य प्रदेश, गुजरात, हरियाणा, उतरप्रदेश आदि प्रदशों में प्रतिहार, परमार चौहान, सोलंकी गहलोत आदि राजपूत वंशों के गौत्र शिल्पकारों मे विशेषकर बहुतायत में मिलते हैं। इसके पीछे कारण यह हैं कि इन उपरोक्त वंशों के राज्यकाल में शस्त्रागारों की पूर्ण जिम्मेदारियां, शस्त्र सौंपी जाती थी। उपरोक्त शस्त्रागारों के लिये शस्त्र निर्मााण करने और उनकी देख रेख तथा सुरक्षा करने वाले लोहशिल्पकार राजपूत ही मुस्लिम एवं ब्रिटिश शासनकाल में लोहशिल्पकार (लोहार) बन गये थे।

यहां पर एक बात विशेष रूप से ध्यान में रखने की हैं कि इतिहास के विद्वानों में राजपूत जाति की उत्पति के विषय में बहुत मत भेद हैं। कुछ विद्वान राजपूतों की उत्पति प्राचीन ब्राहमणों से मानते हैं तो कुछ विद्वान इन्हें प्राचीन क्षत्रियों से ही वंशज बतलाते हैं। कुछ विद्वान उन्हें विदेशियों के वंशज या सभी का समिश्रण बतलाते हैं। परन्तु हमारें अनुमान विचार और अध्ययन के अनुसार राजपूत जाति प्राचीन ब्राह्मण और क्षत्रिय शासक, जातियों की ही वंशज जाति हैं। प्रतिहार परमार, चौहान एवं सोलंकी वंश की राजपूत जातियों को अग्निवंशी क्षत्रिय

भी कहा जाता हैं। हमारा अनुमान और विचार यह हैं कि :–

लोह शिल्प का अग्निकार्य करने वाले छोटे छोटे और बिखरे हुए प्राचीन क्षत्रिय वंशजों को अब आबू पर्वत पर हमारे ऋषियों द्वारा संगठित कर एकताबद्ध किया गया तब उस समय उन्हें अग्निवंशी क्षत्रिय नाम दिया गया होगा। इन्ही अग्निवंशीय राजपूतों के राज्य जब कमजोर हो गये या समाप्त हो गये तब इन्होंने पुनः अपना पुराना अग्निधर्म कार्य अपना लिया और अग्निवंशीय क्षत्रियों से अग्निकर्मी लोहशिल्पकार बन गये। इसी लिये ही उपरोक्तसभी राजपूत जातियों के गौत्र वर्तमान लोहार जातियों में भी प्रचलित है। इन्ही कारणों से ही राजस्थान, मध्यप्रदेश आदि प्रदेशों की लोहकार जातियों की कुलदेवियां और गृह भैरवजी भी वही हैं जो इनके मूल राजपूत जातियों में पूजित थे। कुछ गुण, स्वभाव, रीतिरिवाज और रहन सजन भी राजपूत शासक जातियों से ही मिलते जुलते हैं।

उपरोक्त विवेचन, पुराणों, अन्य प्राचीन शास्त्रों, साहित्य इतिहास आदि से प्राप्त तथ्यों, कुछ पारम्परिक मान्यताओं, किस्से कहानियों एवं कुछ वास्तविक, वस्तुपरक प्रमाणों के आधार पर किया गया हैं फिर भी अन्तिम निर्णय समाज के विचारशील एवं प्रबुद्ध भाई बन्धु स्वयं अपने स्वाध्याय, ज्ञान तथा विवेक से करने की कृपा करेंगे तो ही सत्य असत्य का सही निर्णय हो सकेगा।

अन्त में, इसमें कोई संदेह नहीं हैं कि हमारा लोहशिल्पकार समाज आदिकाल के देवपुरूषों, ऋषि, महर्षियों, महान ज्ञानी, विज्ञानीयों तथा सूर्यवंशी, चन्द्र वंशी, अग्नि वंशी आदि क्षत्रियों के महानराजा, महाराजा, चक्रवर्ती सम्राटों का वंशज हैं। हमें इन पर गर्व भी होना चाहिये और इनकी पूजा – अर्चना आदर सम्मान भी करना चाहिये। इनकी जयन्तियां भी मनानी चाहिये। परन्तु इसके साथ ही हमें यह भी ध्यान रखना और समझना चाहिये कि अपने आपको या अपने समाज को ब्राह्मण या क्षत्रिय समझ लेने या मान लेने या सिद्ध कर लेने मात्र से ही हम बड़े या सम्मानित नहीं बन सकते।। कोई भी व्यक्ति या समाज या संगठन बड़ा या सम्मनित तभी माना जाता हैं जब उसके पास या तो राजनैतिक सत्ता हो या आर्थिक सम्पन्नता हो या उसके पास विशेष योग्यता एवं ऊंचे कार्य कर सकने की क्षमता तथा दक्षता हो। इस लिए यदि हम सच्चे मन से अपने आपको और अपनेसमाज को उच्च और सम्मानित रूप से हो। इस लिये यदि हम सच्चे मन से अपने आपको और अपने समाज को उच्च और सम्मानित रूप में देखना और दिखाना चाहते हैं तो हमें ऊपर बताई गई योग्यताएं, कार्य क्षमताएं, गुण और स्वभाव अर्जित करने के प्रयास करने चाहिये।

सामाजिक एवं राजनैतिक कार्य गतिविधियों में सक्रिय होना चाहिये। हमारे आस पड़ौस से प्रगतिशील और बढ़े हुए अन्य समाजों ने किन किन कारणों से, किस किस उपाय एवं कौन कौन से कार्यो से आर्थिक और सामाजिक उन्नति और सुढ़ता प्राप्त की हैं, उन बातों का अध्ययन और मनन करके, हमें भी वैसे ही एवं उसी प्रकार से कार्य करने के संकल्प लेने चाहिये। अपने समाज के समस्त भाई बहिनों को एक साथ मिल बैठ कर समाज की प्रगति और उन्नति के उपाय सोच कर उन उपायों के अनुसार काम करने चाहिये। कमजोर और जरूरतमन्द भाई, बहिनों, बच्चों, छात्रों की यथा शक्ति मदद करनी चाहिये। एक दूसरे का सहयोग, प्रेम, भाईचारा, कठिन परिश्रम और लगन ही सामाजिक उत्थान के मूल मंत्र हैं। भूतकाल और इतिहास प्रेरणा प्राप्ति और उत्साहवर्धन के लिये आवश्यक और अनिवार्य हैं परन्तु यह वर्तमान ही हैं जिसमें हम लोग कुछ करके अपना भविष्य बना सकते हैं। आओ ! हम संकल्प करके कार्यों में जुट जावें। अपना और अपने समाज का भविष्य निर्माण करें। उन्नति और प्रगति के पथ की और अग्रसर हो कर, सही अर्थों में एवं वास्तविक रूप में हम अपने को ब्राहमण, क्षत्रिय, वैश्य जैसे उच्च तथा सम्मानित समाज बना सकें औरसिद्ध भी कर सकें, इस प्रकार के काम, उपाय और प्रयास हमें निरन्तर एवं नियमित रूप से करते रहना चाहिये।

श्री देववंशीय मालवीय लोहार समाज विकास समिति (रोई परगणा)

द्वितीय स्नेह मिलन समारोह

रविवार, 02 नवम्बर,2008,

स्थान – मारकुण्डेष्वर तीर्थ धाम, अजारी

श्री देववंषीय मालवीय लोहार समाज रोई परगना का द्वितीय वार्षिक स्नेह मिलन समारोह दिनांक 2.11.2008 कार्तिक सुदी चतुर्थी को श्री मारकुण्डेष्वर तीर्थ धाम, अजारी में महन्त श्री श्री 1008 श्री षम्भूनाथजी महाराज गोरक्ष आश्रम, आम्बेष्वर धाम एवं महन्त श्री श्री 1008 श्री रेवानाथजी महाराज, मारकुण्डेष्वर धामअजारी की कृपा सानिध्य में आयोजित किया गया। जिसमें संत महात्माओं द्वारा आर्षिवचन, अतिथियों द्वारा समाज का उद्बोधन एवं पदाधिकारियों द्वारा भावी रूपरेखा पर प्रकाष डाला गया। साथ ही समारोह में प्रतिभाषाली छात्र–छा्त्राओं को सम्मानित किया गया ।

प्रस्तुती – श्री भंवरलाल देवड़ा चौहान– अजारी 9414867730

श्री रणछोड़ राज

अखिल भारतीय देववंशीय मालवीय लोहार युवा संघ
मालवीय लोहार युवा संघ, जोधपुर (राज.)

—: अनुरोध :—

जैसे कि आप सब को ज्ञात हैं कि अभी समय के एक बुराई समाज में पनपने लगी हैं जिससे सारे समाज की स्थिति बिगड़ रही हैं। इस बुराई का नाम हैं विवाह संबंधों का विच्छेद होगा। आज के समय में जहां नवदम्पति (पति – पत्नी) के बीच गलत फहमी, मतभेद, एक दुसरे के प्रति सम्मान नहीं होने के कारण नवविवाहित संबंध बिगड़ रहे हैं व बिगड़ने की स्थिति आ गये हैं। इस तरह की स्थिति को देखकर युवा संघ के सभी सदस्यों ने इस बुराई को पूर्ण समाप्त करने का सफल संकल्प लिया हैं। इस लिये युवा संघ द्वारा एक कमेटी का गठन किया गया हैं जो इस तरह के बिगड़ते विवाहित संबंधो को बिगड़ने से बचायेगी।

कमेटी अपने प्रयासों से बिगड़ते हुए विवाहिता रिश्तों को टुटने से बचाने का प्रयास करेगी व आपसी गलत फहमियों को दूर कर नवदम्पति के गृहस्थी को पूर्ण रूप से वापस स्थापित करने का प्रयास करेगी।

पूर्व में युवा संघ द्वारा इस तरह के कई वैवाहिक विवादों का सफलता पूर्वक सुलझाकर नवदम्पति के गृहस्थी को टूटने से बचाया गया। समाज के कई तरह के विवादित मामलों को सफलता पूर्वक सुलझाया गया हैं। और इन संबंधों में आपस में हुई कानूनी कार्यवाही को समाप्त किया गया हैं।

अगर समाज के किसी बन्धु पर किसी भी तरह की कानूनी कार्यवाही चल रही हैं या कानूनी कार्यवाही चलने का अंदेशा हैं तो आप तुरन्त युवा संघ से सम्पर्क करें जिससे युवा संघ आपको हर तरह की कानूनी कार्यवाही से बचाने का प्रयास करेगा।

आप सभी समाज बन्धुओं से निवेदन हैं कि जहां भी आपकी नजर में ऐसे परिवार हो जिसके वैवाहिक संबंध बिगड़ा हुआ हैं या बिगड़ रहा हैं तो आप तुरन्त प्रभाव से युवा संघ जोधपुर से सम्पर्क करें ताकि बिगड़ते हुए वैवाहिक रिश्तों को वापिस स्थापित कर सकें।

लक्ष्मण चौहान (सचिव)
अखिल भारतीय देववंशीय,
मालवीय लोहार युवा संघ,
मो. 9929699706

डूंगरसिंह लोहार (अध्यक्ष)
अखिल भारतीय देववंशीय
मालवीय लोहार युवा संघ
मो. 9929701290

सहयोगी : प्रशासनिक अधिकारी, सामाजिक बुजुर्गगण व युवा सदस्य

समाज का ऋण चुकाना होगा

जगन्नाथ गेहलोत
64, सेन्ट्रल स्कूल, एयर फोर्स रोड़, जोधपुर

मनुश्य एक सामाजिक प्राणी है। उसकी आवष्यकताओं की पूर्ति समाज से होती है। गाय, हरिण, खरगोष आदि के बच्चे जन्म लेने के कुछ देर पष्चात् ही अपने पैरों पर खड़े हो जाते हैं। वे अपनी मॉ का दूध भी अपने ही प्रयत्न से पीने लगते हैं। जन्म लेने के कुछ समय पष्चात् ही चल फिर कर घास आदि ढूंढकर पेट भरने लग जाते हैं। मनुश्य का बच्चा यह कार्य कुछ वर्श बीतने पर करता है। यदि उसे मॉ दूध न पिलावें तो वह भूखा मर जाता है क्योंकि वह अपने प्रयत्न से मॉ के स्तन को भी नहीं ढूंढ पाता। मल मूत्र त्यागने, नहाने, खाने–पीने के लिए उसे कई महिनों तक अपने माँ–बाप पर निर्भर रहना पड़ता है। बोलना, लिखना–पढ़ना भी वह समाज के सहयोग से ही सीखता है। उसे अपना गुजारा करने का सामर्थ्य तो कई वर्शों बाद आता है। तब तक वह अपने परिवार पर ही निर्भर रहता है।

मनुश्य जब विवाह योग्य हो जाता है तो उसे सुयोग्य पत्नी भी समाज के योगदान से ही मिलती है। मॉ–बाप लड़की को सुयोग्य बनाते हैं और उदारतापूर्वक कन्यादान कर देते हैं। अन्य प्राणी कुछ समय के लिए दाम्पत्य जीवन बनाते हैं और फिर बिछुड़ जाते हैं।

मनुश्य समाज का सहयोग और अपुदान लेकर सभी सुख–सुविधाएँ प्राप्त करता है। वह समाज से सहयोग पाते रहने के कारण वह समाज का ऋणी हो जाता है। वह बुद्धि पूर्वक अपने कर्तव्य–कर्म को उतार सकता हैं।

वर्तमान में मनुष्य में व्यक्तिगत स्वार्थ की भावना अधिक देखने को मिलती हैं। लेना – लेना ओर मात्र लेना यह कार्य मानव का रह गया हैं। यदि मनुष्य समाज से लेते रहे और देने की बात ही न सोचे तो समाज पिछड़ जाता हैं और उसमें व्यक्तियों का सहयोग और सहायता करने की क्षमता और सामर्थ्य नहीं रहती। समाज की प्रगति रूक जाती हैं। जैसे – बैंक से ऋण तो लेवें पर कोई लौटावे ही नहीं तो बैंक दिवालिया हो जायेगा। जमीन से फसलें लेते रहे और खाद – उर्वरक न देंवे तो एक दिन जमीन फसल देना बंद कर देगी।

समाज में भी तो लो और दो की नीति पर समाज की व्यवस्थाएं चलती हैं। यदि समाज से लेने के लिए तो तैयार और देने से इन्कार करने की परम्परा चल पड़े तो समाज की सारी व्यवस्था बिगड़ जायेगी। मनुष्य अपनी आवश्यकतापूर्ति के लिए समाज से लेता हैं और उसे कर्तव्य पालन के लिए देना पड़ता हैं।

मनुष्य का बाल्यकाल व किशोर अवस्था तो शारीरिक विकास, पढ़ाई – लिखाई शिक्षा अर्जन में बीत जाती है। इस अवस्था में वह अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए परिवार और समाज पर निर्भर रहता हैं। युवा व प्रौढ़ अवस्था ही धन कमाने, यश वैभव प्राप्त करने, परिवार – समाज की सेवा के लिए हैं। इसी अवस्था में सुकृत एवं परोपकार के कार्य किये जा सकते हैं। अपनी योग्यता, समय और सामर्थ्य समाज के हित में लगाया जा सकता हैं। इसी अवस्था में उदारता से दान दिया जा सकता हैं। ऐसा अवसर फिर नहीं आने का हैं। इस लिए उठें जागों और तन, मन, धन से समाज की सेवा एवं सहयोग कर समाज के ऋण से उऋण हो जावें।

राजेन्द्रकुमार भाटोतरा

☎ 9413877402

भाटोतरा वैल्डिंग वर्क्स

हमारें यहां मॉडर्न रैलिंग, गेट व सभी प्रकार की जालियां किफायत भाव से बनाई जाती हैं।

माल गोदाम रोड़, सोजत रोड़ 306103
जिला – पाली (राज.)

जिला स्तरीय प्रतिभावान छात्र – छात्रा अभिनंदन समारोह 2008

प्रस्तुती – श्री प्रतापरामजी हेमलियावास, मो. 9414608578

समाज में समुज्जवल भविश्य के लिए श्रेश्ठ उपलब्धियां अर्जित करने वाले स्वजाति बालक–बालिकाओं की प्रतिभाओं का सम्मान कर उन्हें पुरस्कृत करने हेतु श्री सगतेष्वर षिक्षा समिति मा.ज. ने जिला स्तरीय सम्मान समारोह 2008 का आयोजन दिनांक 2.1108 कों प्रातः 10.00 बजे श्री उम्मेद वाटिका, आऊवा रोड़, मारवाड़ जंक्षन में श्री भंवरलाल गहलोत, नरसिंहपुरा की अध्यक्षता में आयोजित किया गया । इस कार्यक्रममें श्री प्रतापराम हेमलियावास ने संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत करते हुए षिक्षा समिति के उद्देष्यों पर प्रकाष डालते हुए बताया कि जिन छा्त्र–छा्त्राओं ने सत्र् 2007–08 में दसवीं, बारहवी बोर्ड, स्नातक, स्नातकोत्तर एवं व्यवसायिक डिग्रियों में 60 प्रतिषत एवं इससे अधिक अंक प्राप्त करने वाले समाज के प्रतिभावान छात्र–छात्राओंको ही समाहित किया गया है। समारोह में श्री मूलचन्द,श्री गोविन्द मालवीय पुत्र स्व.श्री रामलाल भाटोतरा निवारी बिठोड़ा कलां, मा.ज. के द्वारा भोजन प्रसादी दी गई साथ ही समारोह में श्री मंगलचन्द गौराणा पुत्र श्री फाऊलाल ''बजरंग मोटर्स, मरूधर केसरी रोड़, सोजत सिटी द्वारा 38 छात्रों–छात्राओं को पारितोशिक एवं साथ ही कार्यक्रम में भाग लेने वाले समस्त समाज बन्धुओं को स्मृति चिन्ह प्रदान किये गये। जरूरतमंद छात्रों–छात्राओं को पाठ्य सामग्री उपलब्ध कराने के लिए श्री सुरेन्द्रजी पंवार, पंवार आईरन सरदार समंदरोड़ पाली, श्री बालकृश्ण लोहार (प्रबन्धक), प्रगति सीमेन्ट प्रा. लिमिटेड मुकाम पोस्ट झुठां, और श्री हजारीलाल बीमा अभिकर्त्ता मु.पो. पाचेटिया, वाया –सोमेसर वालो 1000–1000 रूपये की सहायतार्थ राषि प्रदान की और श्री मिश्रीलाल आसोरिया ठाकुरवास की तरफ से 11 पौशाके वितरीत की गई। इस अवसर पर टेन्ट व्यवस्था श्री भोजराज कम्बेड़िया चौहान, दुर्गा टेन्ट हाऊस मा.ज. वालो ने की। इस अवसर पर श्री लक्ष्मीनारायणजी सुमेरपुर, श्री राजेन्द्र गहलोत, राज मोटर्स मा.ज. तथा श्री जुगराज आसोरिया निवारी ठाकुरवास वालो ने समाज के छात्र–छात्राओ को सहयोग देने की घोशणा की। कार्यक्रम में श्री ष्यामसुन्दर लोहार, व. अध्यापक निवारी सुमेरपुर वालो को राज्य स्तर पर सम्मानित होने के उपलक्ष में समानित किया गया। श्री श्रवण कुमार लोहार निवासी बिलाड़ा ने केरियर के बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान की। कार्यक्रम का संचालन श्री जगदीष लाल लोहार अंग्रेजी व्या. पाली एवं श्री घनष्याम आसोरिया, संपादक मालवीय लोहार संदेष निवासी ठाकुरवास ने किया। कार्यक्रम में चौथमलजी बूसी, मोडारामजी पाली, मांगीलालजी खारची, नारायणलालजी राणावास, सुरजमलजी मा.जं., विरदारामजी माण्डा, श्रवणजी बांता, बाबूलालजी आसोरिया मा.जं., नृसिंहजी पाली, अमरलालजी अध्या. सवराड़, दिनेशजी सियाट, हरिधर मालवीय मारवाड़ जंक्शन, चेतनजी निम्बली, रघुनाथचन्दजी गादाणा आदि समाज के महानुभाव उपस्थित थे।

।। कर भला तो होवे भला ।।

संकलन– अनुसूया गोवर्धन लालजी आसोरिया
जोबट म.प्र. 457990
(मो.09406604149,09424880639)

एक पेंड़ की डालपर एक कबुतर बैठा था। पेड़ पदी किनारे पर तथा डाली पानी से ऊपर थी। कबुतर ने देखा पानी कीधारा में एक चींटी बहती जा रही थी। बचकर किनारे आने की बहुत कोषिष करने पर भी नहीं आ सकी। कबुतर देख रहा था, उसे लगा कुछ क्षणों में चींटी मर जावेगी। उसने चोंच से एक पत्ता चींटी के आगे गिरा दिया। चींटी उस पत्ते पर चढ़कर किनारे लग गई और उसकी जान बच गई। उसने कबुतर की बहुत प्रसंषा की। कबुतर ने उसकी जान बचाई।

उसी समय एक शिकारी वहॉ आया और पेड़ कें नीचे छुपकर बैठ गया। वह कबुतर को पकड़ना चाहता था। कबुतर ने षिकारी को नहीं देखा। कबुतर को जाल में फंसा लेने के लिये उसने अपना बॉस उपर बढ़ाया, यह सब देखकर चींटी जल्दी से षिकारी के पास पहुंची। यदि वह बोल सकती तो कबुतर को सावधान करके उड़ा देती। अपने प्राण बचाने वाले कबुतर को रक्षा करने के लिये उस चींटी ने षिकारी के पॉव पर चढकर उसकी जॉघ मे पूरे जोर से काट लिया। चींटी के काटने से षिकारी चमक गया उसके हाथ का बॉस हिल गया जिसके कारण पेड़ के पत्ते खड़क गये। कबुतर नें षिकारी को देख लिया और वह तुरन्त उड़ गया। उस प्रकार चींटी ने कबुतर की जान भी बचाई। कबुतर नें चींटी की जान बचाई थी तो छोटी सी चींटी ने कबुतर को बचाया।

सीख :– जो मनुश्य संकट में पड़े लोगों की सहायता करते है, उनप र संकट आने पर उनकी सहायता का प्रबन्ध भगवान अवष्य कर देते है। अतः हमें भी मानव जीवन में परोपकार का एक कार्य प्रतिदिन अवष्य करना चाहिये। हमारे ऊपर उपकार करने वाले को हमें नहीं भूलना चाहिये। कबुतर और चींटीजैसे मूक प्राणी परोपकार कर सकते है तो हम क्यों नहीं कर सकते हैं ?

बाल कृष्ण लोहार (प्रबन्धक)
मो. 093142 – 24557,
093142 – 20036,
02937 – 220080 (घर)

प्रगति सीमेन्ट प्रा. लिमिटेड

ओ.पी.सी. सीमेन्ट, 53 ग्रेड के निर्माता एवं विक्रेता

मुकाम पोस्ट - झुंठा, तहसील - रायपुर मारवाड़, (जिला - पाली) राजस्थान
फोन नं. 02937 - 220053

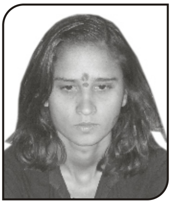

सती अनुसूया

श्री संतोष योगिनी, श्री सप्त देवी बायोसा मंदिर, सवराड़

सती अनुसूया अत्री ऋषि की धर्मपत्नी थी, जिसके पतिव्रत धर्म की चर्चा की तीनों लोकों में होने लगी थी। वह न केवल पतिव्रता थी बल्कि हर रोज वेद पाठ के अतिरिक्त हवन यज्ञ भी करती थी और अतिथि सत्कार के लिए तो इतनी प्रसिद्ध थी कि कोई भी उनके आश्रम से खाली नहीं जाता था । एक बार देवर्षि नारद ने ब्रह्मा, विष्णु और महेश के पास जाकर उसके पतिव्रत धर्म और दूसरे गुणों की प्रशंसा की तो उनके मन में विचार आया कि मृत्यु लोक में जाकर उसकी परीक्षा लेनी चाहिए। यह निश्चय करके उन तीनों ने साधुओं का वेष धारण कर लिया और अत्री ऋषि के आश्रम पर जाकर भिक्षा के लिए 'जय नारायण' की धुन लगा दी। अत्री ऋर्षि उस समय घर पर न थे। जब सती अनुसूया उनको भिक्षा देने के लिए बाहर आई तो वे तीनों कहने लगे कि वे भिक्षा तभी ग्रहण करेंगे, यदि वह वस्त्र उतार कर भिक्षा देगी। यह सुनकर अनुसूया बहुत सोच में पड़ गई कि करे तो क्या करे। यदि वस्त्र उतारकर वह साधुओं के आगे नग्न होकर जाती हैं तो उसका पतिव्रत धर्म भंग होता है और यदि साधु महात्मा भिक्षा लिए बिना खाली हाथ वापस जाते है। तो उसका अतिथि सत्कार झूठा होकर रह जाता है। आखिर उसने यह सोच कर कि दूध पीते बच्चों के सामने माँ को नग्न भी होना पड़े तो कोई हर्ज नहीं, उसने भगवान से प्रार्थना की कि तीनों साधू दूध पीते बच्चे बन जाएं। पतिव्रता स्त्री की प्रार्थना भगवान सदैव सुन लेते हैं और अनुसूया के ऐसे सोचते ही ब्रह्मा, विष्णु और महेश तीनों एक ही शक्ल के छोटे–छोटे बच्चे बन गए। अनसूइया ने उनको पालने में डाल कर दूध पिला दिया और तीनों बच्चे मुस्कराने लगे। जब अत्री ऋषि वापस घर आए, घर में बच्चों को देखकर हैरान रह गए। अनुसूया के बताने पर कि वे बच्चे कौन हैं, पति–पत्नी दोनों ने निर्णय कर लिया कि अब उन बच्चों को आश्रम में रखा जाए। उधर देवी सरस्वती, लक्ष्मी और पार्वती, जो क्रमशः ब्रह्मा, विष्णु और महेश की धर्मपत्नियाँ हैं, बहुत घबरा गई कि उनके पति घर वापस क्यों नहीं आए।

जब देवर्षि नारद ने उसको बताया कि वे तीनों देव अत्री ऋर्षि के आश्रम में गए हुए हैं तो वे तीनों देवियाँ अपने–अपने पति की तलाश में वहाँ पहुँच गई और यह देखकर हैरान हो गई कि उनमें से वहाँ कोई भी नहीं था अनसूइया के साथ बातचीत करने पर कि वे बच्चे कौन है, वे समझ गई कि वे उनके पति ही हैं। पर चूँकि तीनों बच्चों की शक्लें एक जैसी थी, वे उलझन में पड़ गई कि क्या किया जाए। आखिर उनकी प्रार्थना करने पर अनुसूया ने भगवान से फिर प्रार्थना की कि वे बच्चे अपने असली रूप को धारण कर लें। तो ब्रह्मा, विष्णु, महेश वहीं विराजमान हो गए और अपनी पत्नियों के साथ सती अनुसूया को नमस्कार करके खुशी –खुशी वापस चले गए।

www.lifecareteamwork.com

1. जीवन आनन्द 149
2. जीवन तरंग 178
3. जीवन साथी 89
4. जीवन सरल 165
5. जीवन मित्र 133
6. प्रोफिट प्लस 188
7. न्यू जनरक्षा 191

Life Care

Better Care - Batter Life

मार्केटिंग नेटवर्क से जुड़कर असीमित आय प्राप्त करें ।

स्वयं की जीवन बीमा पॉलिसी (एल.आई.सी. ऑफ इंडिया)
दो सदस्य बनाकर उनका जीवन बीमा करना।
दोनो सदस्यों की सहायता करना।

become lifecare distributor

A decision can change you and you life style

श्री घनश्यामलाल (अध्या.) रा.उ.मा.वि.,
मारवाड़ जं. मो. 9414679559

श्रीमती वन्दना गौराणा, सुभम गौराणा,
कैलाश गौराणा – 9413707416
सतनारायण मन्दिर के पास, शांति भवन, मा.जं.

जीवन में एकाग्रता का महत्व

श्रीमती वन्दना गौराणा
सत्यनारायण मन्दिर के पास, मा.जं. 9414679559

एक लड़के ने देखा कि दुनिया में जो लोग धनवान है, वे बहुत खुशी है इसलिए उसने धनवान बनने का निश्चय किया। कई दिनों तक वह धन्धो में जुटा रहा कि धन कमाकर धनवान बन जाऊ। कुछ धन कमाना भी परन्तु तभी एक दिन उसकी भेंट एक विद्वान से हुई। उससे बात करके लड़के को लगा कि धनवान बनने में कुछ नहीं रखा मुझे विद्वान बनना चाहिए। तब लोग मेरा भी उसी तरह आदर करेंगे , जिस तरह इस विद्वान का करते हैं। इसलिए उसने विद्वान बनने का निश्चय किया। अब वह अपना धन्धा छोड़कर पढ़ाई करने लगा। अभी वह थोड़ा सा ही पढ़ पाया था कि उसकी भेंट एक संगीतज्ञ से हुई। लड़के को संगीत में बड़ा आकर्षण लगा तो उसने विद्वान बनना छोड़कर संगीतज्ञ बनने का निश्चय किया। अब वह संगीत सीखने लगा। तभी एक अच्छा चित्रकार मिला, फिर संगीत छोड़कर चित्रकार बनने का निश्चय किया। फिर कुछ और ....फिर....कुछ और..... । यहीं करते करते उसकी आधी उम्र बीत गयी और वह कुछ न कर सका। यह सोचकर उसे बहुत दुःख हुआ। एक दिन उसकी भेंट एक महात्मा से हुई। उसने उनसे अपने दुःख का कारण पूछा। महात्मा ने उसकी सुनकर कहा – तुम मन की चंचलता का अभिशाप भोग रहे हो। तुम्हारा मन स्थिर नहीं हैं। यदि तुम किसी काम को एकाग्रचित होकर करते तो उसी में रम जाते और दूसरे प्रलोभन तुम्हें न सताते। यदि मन में भटकाव आता है तो इसका अर्थ है कि तुममें विचारों की एकाग्रता नहीं हैं। महात्माजी ने कहा ’बेटा ! यह दुनिया बहुत चिकनी है। जहां जाओगे, वहां कोई न कोई आकर्षण या प्रलोभन तुम्हें अपनी ओर खींचेगा। इसलिए जो भी काम करो उसके प्रति यह निश्चय कर लो कि मैं इसे पूरे एकाग्र भाव से करूंगा चाहे मुझे कितने ही प्रलोभन क्यों न सताए। बस अपने इसी निश्चय पर अमल करते रहो। तुम देखोगे कि एक दिन तुम उस कार्य में सफलता के शिखर पर पहुँच जाओगे।’ उस युवक ने अपनी भूल समझ ली और वह निश्चिन्त होकर एकाग्र भाव से अपने जीवन के उद्देश्य की ओर बढ़ चला और चरम सफलता पर पहुँचा।

शिक्षा को अपनाएं सुखी समाज बनाएं

श्री शिवलाल मालवीय – नारलाई (पाली) 02934– 260351

समय की बातें कटु सत्य है शिक्षा मनुश्य को हिम्मत देती है, स्वविवेक,स्व निर्णय जगाती है। कठिन समय, कठिन परिस्थितियां, समस्यामूलक स्थलों पर सहायक है। इतना जानते, हुए भी हम क्षणिक लाभ के पीछे लड़के–लड़कियों की मजदूरी, गृहकार्य या हूनर में सहायक बना देते हैं, तब ही लोगों ने कहना शुरू किया कि आई मूंछ नै वुई पूछ ।'कुछ लोग विद्या का अर्थ व सम्बन्ध नौकरी से लेते हैं, यह उनकी भारी भूल है। विद्या तो सर्वांगीण विकास का माध्यम है, नौकरी सर्वांगीण क्षेत्र का एक क्षेत्र ही हैं।

शिक्षा का अर्थ, महत्व,क्षेत्र एवं सिद्वान्त स्पश्ट हुए तो हमारे सामने बात आ खड़ी हुई कि जिन्दगी की सफर बेरोकटोक, आनंदमयी करना हैं है तो शिक्षा के क्षेत्र का सही व सबल मार्ग पकड़े। जानकारी मिलने के बाद भूल करे तो मूर्खता है, मूर्खता क्या महामूर्खता है अब देर नहीं करें, अंधेरे में नहीं भटके, शीघ्र अपनी कीमती, लाड़ली व बुढ़ापे के सहारे वाली प्रिय सन्तान को शिक्षा केन्द्रों एवं विद्यालयों से जोड़े। नींव बिना भवन नहीं, शिक्षा बिना जीवन नहीं, बात को अपनाना शुरू करें ।

कैसे पढ़ाएं ? किसे पढ़ाएं ?इस बात को अच्छी तरह समझे। पढ़ाना सबको हैं। चाहे पुरूश हो, चाहे महिला। दोनों को पढ़ने, आगे बढ़ने और जीवन सफल बनाने का समान अधिकार हैं, इसलिए बिना भेद–भाव के पढ़ाना है। प्रत्येक को सरकार द्वारा निर्धारित सामान्य–शिक्षा' ज्ञान तो अनिवार्यतः कराना है। जिन्होंने सामान्य शिक्षा के जहत् 10 वीं बोर्ड में प्रथम स्थान प्राप्त किया है या उच्चतम श्रेणी बिना नकल, बिना किसी सिफारिश, सहारे से अत्तीर्ण की है और प्रतिभावान विद्यार्थी की श्रेणी में उतर आया हैं तो उसे उसकी चाह के मुताबिक आई.ए.एस., आई.पी.एस., न्यायाधीश, वकील, डॉक्टर,इंजीनियर, आर.ए.एस आदि बनाने हेतु सम्बन्धित महाविद्यालय से जोड़े। शेश को तोड़े नहीं, उन्हें उनकी चाह–इच्छा रूचि के मुताबिक निर्णय लेकर व्यावसायिक शिक्षा से जोड़े। दोनों के लिए आगे पढ़ने हेतु सरकार से मिलने वाले लाभ का फायदा उठाऍं। आजकल महिलाओं को आगे बढ़ाने के लिए सरकार ने अनेक सुख–सुविधाऍं खोल रखीं है । उन योजनाओं को ग्राम पंचायत, सर्व शिक्षा अभियान, समाज के अन्य समाज सेवी लोगों से समझ कर लाभ अठावें ।

जब हमारे मालवीय लोहार समाज का ध्यान शिक्षा केन्द्रित हो जाएगा तो आने वाला समाज कुछ ओर ही होगा। समाज के अन्दर अनेक भाग्यशाली,पूंजीधारी और लक्ष्मी उपासक उदारमना व्यक्ति हैं, जो अपनी पूंजी को समाजहित में लगाने के इच्छुक हैं ,वें यदि अपना दृष्टिकोण शिक्षा क्षेत्र में जोड़ दे, मोड़ दें और दृढ़ संकल्प ले लें तो कल बड़ी बड़ी सिटियां में जहां महाविद्यालय संचालित हैं, वहॉ जोरदार छात्रावासें खड़ी हो जाएं, गरीब छात्रों को आर्थिक मदद् देना शुरू कर दें, उनकी (विद्यार्थियों) समस्याएं सुनना शुरू कर दे ंतो हमारे समाज में शिक्षा ज्योति ऐसी जलनी शुरू हो जावें कि दानवीरों का दान मान–सम्मान में बदल जावें ।एक विद्यार्थी को शिक्षा जगत में गोद रूप में सहारा देने लग जावें तो उनके अपार सहयोग से अनेकों शिक्षित व्यक्ति वट वृक्ष की तरह फलते–फूलते नजर आएं ।कमाना करीब सबको आता हैं , जिनके भी पेट है और उनमें अधिकांश को लक्ष्मी कृपा का आशीर्वाद भी खूब मिलता है, परन्तु धन का समुचित सही उपयोग लेना सबको नहीं आता है। यह विद्यादान–महादान है, उसके माध्यम से विद्यार्थी को जीवनदान मिलता है ।यह दान स्थाई है, जो बोट कर नहीं ले सकते हैं। इस ओर भी हमारा ध्यान केन्द्रित हो।

अन्त में, प्रजातांत्रिक राज्य, देश की स्वतंत्रता और अपने जीवन व अपने समाज को सुखी,सफल व मृद्ध बनानेके लिए शिक्षा से जुड़ाव करते हुए सब मिल सिंहनाद लगाएं।

शिक्षा को अपनाएं– सुखी समाज बनाएं ।
शिक्षा को अपनाएं– जीवन सुखी बनाएं ।
शिक्षा ज्योत जलाएं – जीवन सफल बनाएं ।।

G.L. Sisodia
K.K. Sisodia
Y.K. Sisodia

देवाराम सिसोदिया

9983620091
9982591231
9828542182

D.R.V.

Sisodia Electrical & Mechanical Works

Specialist of : Crank Shaft Grinding, Cylinder Boring, Head Grinding & Automobile Electrical Job Works.

Station Road, Sumerpur 306902 Distt. : Pali (Raj.)
Tel : 02933-254742, 253376(R)

पिता सोच रहा है......

श्री तुलसीराम बोराणा उचियार्ड़ा
पोतेदार श्री देव वंषीय मालवीय लोहार समाज
जैतारण पट्टी

पिता सोच रहा है –

उसकी उम्र भर की कमाई खप गई,रंगीन टी.वी., फ्रीज, कूलर, मोटर साईकल व स्कूटरों में व नये नये डिजाइन के फर्नीचरों में। उसकी (स्वर्गीय)पत्नी को तो कुछ भी नसीब नहीं हुआ था, कुछ भी नहीं –

वह उम्र भर बोरियां बिछा कर मेहमानों का स्वागत करती रही, सास–ननदों की झिड़कियां, जेठ–जेठानियों की घुड़कियां,पति की प्रताड़ना सहकर भी मुसकराती रही। साड़ियों को सी कर गद्दे बनाये, फुर्सत निकालकर टुकड़ों पर बेल बुटे सजाये, उसने क्या सुख देखा ? सर्दी में गर्म कपड़ों का अभाव रहा, गर्मी में फ्रीज–कूलर वगैरह का ख्वाब रहा।

वर्शा के टपकते पानी को बाहर निकालने में जुटी रही, पर पतझड़ उसके जीवन के बसंत पर हावी रहा न डॉक्टर को बुलाने के लिए टेलीफोन था और न दवा लाने को सामान था, पुत्रों की षादी नहीं देख सकी बस अपनी काया की बरबादी देख सकी। सांस–ससुर का हाथ सिर पर नहीं था घर भर की सेवा उसकी काया में छेद कर गई। संयुक्त परिवार की सेवा करते–करते दूसरों को जिन्दा रख, वह खुद मर गई वह रो भी नहीं सकता.......... इधर बहुएं खुसर–पुसर करती है– ''बुढ़ा बहुत सोचता है''

सेवानिवृती शुभकामनाएं

श्री मान ढगलारामजी / बंशीलालजी चौहान प्रधानाध्यापक रा.उ.प्रा.विद्यालय नाडी मोहल्ला, पाली से अपनी 34) वर्शीय गौरवमयी अनुकरणीय उत्कृष्ट एवं समर्पित भाव से सफलता पूर्वक सुखद सेवापूर्ण कर दिनॉक 30 नवम्बर 2008 को सेवानिवृत हुए ।सेवानिवृति पर शुभकामनाएं के साथ ही समाज को आपसे अपेक्षा है कि सामाजिक कार्यो में जुड़ कर समाज कोएक नई दिशा प्रदान में योगदान देगें ।

निवास स्थान :- 24, महालक्ष्मी नगर, इमानुअल स्कूल के पीछे, नयॉ गॉव रोड़,पाली, फोन -02932- 517045

सदा स्वस्थ रहने के उपाय

1. सुबह ब्रह्ममुहर्त्त में याने सूर्योदय से 1 घंटा पहले मुस्कुराते हुए उठें तथा रात 10 बजे तक अवष्य सो जाएँ। ताम्बे के लोटे में पानी भर रात में लकड़ी के पाटिये पर रखें, सुबह मुंह साफ करके यह पानी बैठकर धीरे–धीरे पीयें फिर निष्चित समय पर ही षौच जाएँ।

2. सुबह उठते ही मुंह में पानी भरकर आँखों पर मटकी में भरे पानी से 20 बार छपके मारने, नंगे पांव दूब पर घूमने, दिन में तीन–चार बार एवं रात में सोने से पहले पैरों को ठण्डे पानी से धोने से आँखों की रोषनी बढ़ती है।

3. मूत्र विसर्जन बैठकर ही करें तथा दाँत हाथ की मध्यमा अंगूली से ही साफ करें। नित्य 2–3 किलोमीटर तेज चाल से टहलने की आदत डालें। सूर्योदय के समय कुछ देर सूर्य की लालिमा के दर्षन करें।

4. नित्य 20–25 मिनट हल्के व्यायाम करें । सप्ताह में एक बार पूरे षरीर की मालिष अवष्य करें। सुबह के नाष्ते में अंकुरित अनाज (जैसे– चना, मुंग, गेंहू, आदि) को षामिल करें। इसे अमृतान्न कहते है तथा इसके साथ दूध छोटे छोटे घूँट और धीरे–धीरे पीयें। नाष्ते से पूर्व गर्म पानी में नमक डालकर गरारें करें।

5. नियमित समय पर प्रसन्नचित भाव से, मौन रहकर षान्त वातावरण में खाना खूब चबा चबाकर खायें। रोटी को इतना चबाएँ की वह मीठी लगने लगे, जब वह लार के साथ मिलकर पेट में जाएगी तब सुपाच्य हो जाएगी, अच्छी ऊर्जा देगी तथा कश्ट से सदैव बचे रहेंगे। दैनिक भोजन में सलाद एवं हरी सब्जियों को जरूर षामिल करें।

6. यथासंभव भूमि पर पालथी लगाकर नियमित समय पर ही भोजन करें। किसी के साथ एक पात्र में भोजन न करे।

7. भोजन के बाद छाछ के सेवन एवं 1–2 लौंग चूसने तथा आधा चम्मच सौंफ चबाने से पाचन ठीक होता है, मुँह की दुर्गन्ध जाती रहती है, कब्ज नहीं होती एवं पेट की जलन भी दूर होती है।

8. भोजन के बाद दोनों समय 10–10 मिनट (वज्रायन)मुद्रा में बैठना एवं महिने में कम से कम दो दिन उपवास करना लाभप्रद है ।

9. भोजन के तुरन्त बाद चल देना, दौड़ना, कसरत करना एवं सम्भेग करना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है।

10. जब तक तेज भूख नहीं लगे तब तक भोजन नहीं करें। भर पेट भोजन, अनावष्यक, बार–बार व ठूंस कर न खायें। सुबह षाम के भोजन के बीच 8 घंटे का अन्तर रखें तथा दोनों समय के भोजन के बीच में याने दोपहर के समय केवल फल एवं जूस ही लें और कुछ न खायें। रात का भोजन सोने से 3 घंटे पहले करें।

11. भोजन के लगभग एक घंटा पहले एवं एक घंटा बाद ही पानी पीयें मगर भोजन के तत्काल बाद आधा कप गुनगुना पानी पीना हितकारी है। एक वक्त में एक गिलास से ज्यादा पानी न पीयें। दिनभर में करीब ढ़ाई– तीन लीटर जरूर पीयें। बहुत अधिक गर्म या बहुत अधिक ठंड़ी वस्तुऐं नहीं लें।

12. दोनों समय भोजन के बाद मूत्र त्याग करें, ऐसा करने से कमर दर्द नही होता है , पथरी की षिकायत भी नहीं हो पाती तथा नहाने के पहले भी मूत्र त्याग करें । कोई भी कार्य जल्दी व झटके से न करें एवं न उठें। चाय कॉफी , बीड़ी, सिगरेट, जर्दा, गुटका, अफीम , भांग इत्यादी नषीली चीजों का कभी भी सेवन न करें। षरीर के किसी वेग को न रोकं जैसे– मलमूत्र, छींक, जम्हाई, डकार, अपानवायु, भूख , प्यास, पींद, आंसू आदि। हरदम लम्बी ष्वास लेने व कम बोलने की आदत डालें । इससे अनेक बीमारियां दूर हो जाती है।

13. सोते समय सिर हमेषा दक्षिण या पूर्व दिषा की तरफ रखकर बांयी करवट से सोएं , पेट के बल पर कभी न सोएं। पूर्व की ओर मुख करके भोजन करेँ तथा पूर्व या उत्तर की ओर मुंह करके हजामत बनाऐं। सदैव षान्त और प्रसन्न रहें । सद्ग्रन्थों का स्वाध्याय करें। इससे उत्पन्न विचारों से मानसिक सुख प्राप्त होता। हमारे रोग प्रतिरोधक संस्थान को षक्ति प्रदान करने के लिए हाथें में तेल लगाकर कुछ समय ताली बजानी चाहिये। नहाते समय पैर के तलवों को किसी भी खुरदरें पत्थर या झाबे से कुछ क्षण अवष्य ही रगड़ें।

श्री दुर्गाशंकर त्रिवेदी – (योग शिक्षक – राणावास की पुस्तिका से साभार)

सुश्री करिश्मा मालवीय (आसोरिया)
निवासी - ठाकुरवास
कक्षा - 8

02960 – 220313,
02960 – 220913
94141–23613

श्री मंगलचंद गौराणा

HERO HONDA

बजरंग मोटर्स

की ओर से नये वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं

मरूधर केसरी रोड़, सोजत सिटी, जिला - पाली (राज.)

LEARN ENGLISH

WITH SHARWAN MALVIYA

दैनिक जीवन में कई बार हम दो या दो से अधिक ऐसे व्यक्तियों के सामने होते है जो हमसे तो परिचित है लेकिन आपस में अपरिचित होते है षिश्टाचार वष हमें उन्हे आपस में परिचय करवाना चाहिए इसके लिए दोनों पुरूश व एक महिला हो तो पुरूष का महिला का परिचय बड़ी से करवाएं। एक विवाहिता व दुसरी अविवाहिता हो तो अविवाहिता का परिचय विवाहित महिला से पहले करवाएं। जैसे –

Neha- (To mrs.Sarla Asoriya) Can I introduce Mr.Ashok Borana to you ?
Mrs Sarla Asoriya - This is Mr. Ashok Borana.
Mr Ashok Borana- Namastai, Mrs Sarla Asoriya
Neha - (To Mr. Ashok Borana) And Mr. Ashok Borana ! This is Mrs Sarla Asoriya

On Meeting And Departure

जब दो परिचित आपस मेँ मिले तो छोटे व्यक्ति बड़े अभिवादन से पहले या बाद में उनका नाम अवष्य बोले जिससे यह लगे कि आप उनके परिचित है। ये अपनत्व भी दर्षाता है। जैसे–

Ashok- How are you ?
Neha- I'am fine and you ?
Ashok- I' am also fine.
Or Shyam- The weather is very pleasant, isn't it ?
Kuldeep- Yes, it is.
Or Ashok- How are the things going on ?
Mrs Sarla- Very nice and yours ?
Ashok- Mine are also on well position.

मुख्य विशय की चर्चा करने से पहले निम्न षिश्टाचार का पालन अवष्य करें। मुख्य विशय पर निम्न प्रकार लौटे –

Kuldeep- By the way, when will the next edition of Malviya Lohar Sandesh be published ? Or, Anyway ! Can you tell me when the next edition of Malviya Lohar Sandesh will be published ? Or, Will you mind to tell me when the next
edition of Malviya Lohar Sandesh will be published.
Ghanshyam- It's pleasure to tell you that it will be in December,08

विदा होते समय सामने वाले की मनः स्थिति निम्न प्रकार भांपने का प्रयास करें । जैसे–

Suresh- Anything else ? Mr Ashok !

Or, Anything new ? Mr ashok !

Or, What can I do more for you ?

इस प्रकार सामने वाला जवाब देगा – जैसे–

Ashok- Nothing else / new.

Or, No, thanks.

Or, Onething more.

आप स्वयं की ओर से विदाई की पहले निम्न प्रकार कर सकते है ।

Suresh- Now I'm getting late. I should depart. Or, Shall we depart now ? Or,

निम्न षब्दों के साथ विदा होवे –

Ashok- Okay ! We'll meet later.

Or, Okay ! See you again.

Or, Okay ! Good Bye.

Or, Okay ! Have a good day / good night.

Suresh - Okay, Bye.

आप श्रीमती दिपीका , सुश्री आषा व श्रीमती सुजाता के मध्य निम्न बातचित को ध्यान पूर्वक पढ़िएं और अपने इश्ट मित्रों, रिष्तेदारों के साथ इसका अभ्यास करे।

Sujata - Hello ! Mrs Deepika.

Deepika - (shaking hands) Hello ! How are you, Mrs Sujata ?

Sujata - I'm fine and you ?

Deepika - I'm also fine . Anyway, Can I introduce Miss Asha to you ? This is Ms Asha.

Asha - (Raising Hands) Namastai .

Sujata - Namastai !

Deepika - (To sujata) And this is Mrs Sujata.

Asha- Nice to meet you.

Sujata- I too felt very pleased.

Deepika- How have you celebrated Diwali ? Asha !

Asha - It has been a grand Diwali for me And yours ?

Deepika - Mine too has been the happiest.

Sujata - Anything new ? (To Deepika)

Deepika- Nothing. I'am getting late. We should depart.

Asha - Okay, We will meet later.
Sujata - Okay, see you later. Good bye.
Deepika - Okay, Bye. (They departs from each others)

शेष अगले अंक में ....

पत्र मिला

संदेष पत्रिका का चौथा अंक मिल गया है, साधुवाद! पत्रिका के कलेवर में वृद्वि हुर्द है, क्या पत्रिका प्रगति की ओर अग्रसर हो रही है ? हमारें परिवार के साथ हमें भी हार्दिक प्रसन्नता हुई। संदेष पत्रिका का पहला अंक बगैर पूर्व तैयारी के मात्र एक दिन के प्रयास में छपवाई गई। इसमें अक्षर बहुत छोटे थे,पृश्ठ संख्याभी कम थी। 9 मई को सामग्री इकठ्‌ठाकरके छपवाया तथा 10 मई को श्री रणछोड़ भगवान मंदिर बांता में इसका विमोचन भी करा दिया था। दुसरे अंक में श्री सुदामा जी पंवार, श्री नारायणलालजी मिस्त्री, तथा श्री कृश्णकुमारजी, के विचार षिक्षाप्रद एवं सराहनीय है। श्री जगदीषजी लोहार ने अपने लेख में मोक्ष प्राप्ति क सुगम मार्ग बताया है। तीसरे अंक में संगठन पर सम्पादकीय तथा श्री जगन्ननाथ गेहलोत का लेख, श्री षिवलालजी मालवीय एवं श्री मोडाराम सांवलोत की रचनाएँ प्रेरणादायी है। श्रीमती बसन्तीदेवी पंवार की अन्धविष्वास पर सटिक प्रस्तुति पसन्द आई। चौथे अंक के सम्पादन के लिये धन्यवाद। श्री मोहनलाल जी गौराणा, श्री जगदीषजी लोहार तथा श्री षिवलाल मालवीय के समाज में षिक्षा की आवष्यकता पर लेख प्रसंषनीय है। समाज के उदार सहयोगी, षिक्षित एवं बुद्धिजीवी बन्धुओं का हमें इसी प्रकार सहयोग मिलता रहा तो हमारी संदेष पत्रिका रूपी पौधा वट वृक्ष बन जायेगा, इसमें संदेह नहीं है।

श्री आत्माराम पुत्रश्री मीठूजी आसोरिया
मु.पो. जोबट, जिला-अलीराजपुर, मध्यप्रदेश, 09424880639

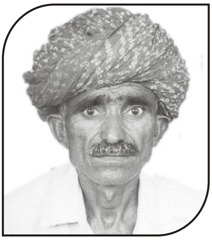

पुण्य तिथि

(23/12/2006)

स्व. श्री जीवराजजी भाटोतरा

श्रद्धावनत

श्री खींवाराम, मांगीलाल (भाई), समसुदेवी (पत्नी) भेराराम, श्यामलाल, मनोहरलाल, गणपतलाल, रमेशकुमार (पुत्र) जशोदा, संतोष, तरूणा, वसुन्धरा, शारदा (पुत्र वधु) कान्ता (पुत्री) चम्पालाल (दामाद) कुलदीप, नेहा,गरिमा, निरंज, निखिल (पौत्र, पौत्रियां)

भैराराम मालवीय 1 – विद्यानगर, बांगड़ कॉलेज के पास,

पाली 306401 फोन नं. 02932 – 224819, मो. 9413222680, 94142784659

निवासी – रिसाणीया, पोस्ट – सवराड़, वाया – सोजत रोड़, जिला – पाली (राज.)

द्वितीय पुण्य तिथि (22/12/2008)

जोबट आसोरिया परिवार की ''वट वृक्ष''

स्वर्गीया मिश्रीबाई मीठूजी आसोरिया एवं सुपुत्र स्व. बंशीलालजी मीठूजी आसोरिया की दसवीं पूण्य तिथि 29/12 पर परिवार का पूण्य स्मरण समस्त परिवार का शत् शत् नमन् ! पूण्य स्मरण !!

सुपुत्र स्व. बंशीलालजी, आत्माराम एवं चतुरभुज (सुरत)

पुत्र वधु – श्रीमती लीलादेवी, स्व. केशरबाई एवं सुशीला बेन

सुपुत्रियां – प्रेमलता पंवार कुक्षी तथा सुमन पंवार इन्दौर

सुपौत्र – दिनेश, विमल, विष्णु, महेश, राजेश, गोवर्धन एवं कान्हा।

पौत्र वधुएं – निर्मला, मंजू, शारदा, पिंका, माधुरी, अनुसूया एवं किरण।

नौ देवियों स्वरूप नौ पोतियां तथा अठारह् पौते एवं पौतड़ियों आपों वन्दन करते हैं। पड़दादीजी

TVS KINETIC bajaj YAMAHA HERO HONDA

राजेन्द्र गहलोत (राजू भाई)

मो. 9829252775

राज ऑटो कन्सल्ट

सभी प्रकार के दुपहिया वाहन खरीदे व बैचे जाते हैं ।

आऊवा रोड़, पेट्रोल पम्प के पास, मा.जं.

एक्सचेंज सुविधा :- पुराना वाहन लाईये, नया वाहन किसी भी शोरूम से ले जाईये ।

मो. 9829252775

राजेन्द्र गहलोत (राजू भाई)

राज श्री प्रोपर्टी डिलर

दूकान, मकान, प्लॉट, बंगले, कृषि भूमि,
फार्म हाऊस खरीदने व बैचने के
लिए सम्पर्क करें ।

आऊवा रोड़, पेट्रोल पम्प के पास,
मारवाड़ जंक्शन (पाली)

ग्राहक संख्या

Book - Post

श्रीमान् ....

....

....

प्रेषक :- सम्पादक, मालवीय लोहार संदेश

मु.पो. ठाकुरवास, वाया - राणावास (पाली) राज. 306023

ई - मेल :- malviyaloharsandesh@gmail.com